

न्यारापन ६

१

आजकल के रीति-रसम प्रमाण जो बहुत प्यारा लगता है तो प्यारे के तरफ न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाते हैं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में अटैचमेन्ट कहते हो। क्योंकि प्यारा है तो अटैचमेन्ट तो होगी ना। लेकिन रीयल और रॉयल प्यार की निशानी है – वो जितना ही प्यारा होगा उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा। इसको कहा जाता है रीयल प्यार, सम्पूर्ण प्यार। वह हर्षित रहेगा, आकर्षित भी होगा परन्तु हृद की आकर्षण करने वाला नहीं। तो रीयल और रॉयल की निशानी क्या हुई? अति प्यारा और अति न्यारा।

२

अपने को ब्राह्मण संसार का समझते हो। ब्राह्मण संसार ही हमारा संसार है, बाप ही हमारा संसार है - ऐसे अनुभव करते हो कि और भी कोई संसार है। बाप और छोटा सा परिवार यही संसार है। जब ऐसा अनुभव करेंगे तब न्यारे और प्यारे बनेंगे। अपना संसार ही न्यारा है। अपनी दृष्टि- वृत्ति सब न्यारी है। ब्राह्मणों की वृत्ति में क्या रहता है? किसी को भी देखते हो तो आत्मिक वृत्ति से, आत्मिक दृष्टि से मिलते हो। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। अगर वृत्ति और दृष्टि में आत्मिक दृष्टि है तो सृष्टि कैसी लगेगी? आत्माओं की सृष्टि कितनी बढ़िया होगी? शरीर को देखते भी आत्मा को देखेंगे। शरीर तो साधन है। लेकिन इस साधन में विशेषता आत्मा की है ना। आत्मा निकल जाती है तो शरीर के साधन की क्या वैल्यु है! आत्मा नहीं है तो देखने से भी डर लगता है। तो विशेषता तो आत्मा की है। प्यारी भी आत्मा लगती है। तो ब्राह्मणों के संसार में स्वतः चलते फिरते आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति है इसलिए कोई दुःख का नाम-निशान नहीं। क्योंकि दुःख होता है शरीर भान से। अगर शरीर

भान को भूलकर आत्मिक स्वरूप में रहते हैं तो सदा सुख ही सुख है। सुखदायी- सुखमय जीवन। क्योंकि बाप को कहते ही हैं – सुखदाता। तो सुखदाता द्वारा सर्व सुखों का वर्सा मिल गया। माँ बाप कहा और वर्सा मिला।

३

इन कर्म-न्द्रियों के मालिक हो ना। जब चाहे कर्म में आओ, जब चाहो कर्म से परे कर्मातीत स्थिति में स्थित हो जाओ। इसको कहा जाता है अभी-अभी न्यारे और अभी-अभी कर्म द्वारा सर्व के प्यारे। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर अनुभव होती है ना। जिन बातों को दुनिया के मानव मुश्किल कहते वह मुश्किल बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए सहज नहीं लेकिन अति सहज है। क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

४

जब ईश्वरीय सुख मिल जाता है तो सदा सुखी बन जाते हैं, दुःख का नाम-निशान नहीं रहता। ईश्वरीय सुख मिला माना सब

कुछ मिला, कोई अप्राप्ति नहीं रहती। अविनाशी सुख में रहने वाले विनाशी चीजों को न्यारा होकर यूज करेगा, फंसेगा नहीं।

५

''सदा ब्राह्मण जीवन को श्रेष्ठ आसन, कमल पुष्प समान स्थिति में स्थित रहते हो? ब्राह्मणों का आसन सदा साथ रहता है तो आप सब ब्राह्मण भी सदा आसन पर विराजमान रहते हो? कमल पुष्प समान स्थिति अर्थात् सदा हर कर्मइन्द्रियों द्वारा कर्म करते हुए भी इन्द्रियों के आकर्षण से न्यारे और प्यारे। सिर्फ स्मृति में न्यारा और प्यारा नहीं, लेकिन हर सैकेंड का सर्व कर्म न्यारे और प्यारे स्थिति में हो। इसी का यादगार आप सबके गायन में अब तक भी भक्त हर कर्म इन्द्रिय के प्रति महिमा में नयन कमल, मुख कमल, हस्त कमल कह कर गायन करते हैं। तो यह किस समय की स्थिति का आसन है? इस ब्राह्मण जीवन का। अपने आपसे पूछो हर कर्म इन्द्रिय कमल समान बनी है? नयन कमल बने हैं? हस्त कमल बने हैं? कमल

अर्थात् कर्म करते हुए भी विकारी बन्धनों से मुक्त। देह को देख भी रहे हैं लेकिन देखते हुए भी नयन कमल वाले, देह के आकर्षण के बन्धन में नहीं आयेंगे। जैसे कमल जल में रहते हुए जल से न्यारा अर्थात् जल के आकर्षण के बन्धन से न्यारा, अनेक भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से न्यारा रहता है। कमल के सम्बन्ध भी बहुत होते हैं। अकेला नहीं होता है प्रवृत्ति मार्ग की निशानी का सूचक है ऐसे ब्राह्मण अर्थात् कमल पुष्प समान बनने वाली आत्माएं प्रवृत्ति में रहते, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक साथ-साथ किचड़े अर्थात् तमोगुणी पतित वातावरण रहते हुए भी न्यारे। जो गुण रचना में है तो मास्टर रचता में वही गुण है। सदा इस आसन पर स्थित रहते हो ? व कभी-कभी स्थित होते हो ? सदा अपने इस आसन को धारण करने वाले ही सर्व बन्धनमुक्त और सदा योगयुक्त बन सकते हैं। अपने आपको देखो – पांच विकार पांच प्रकृति के तत्त्वों के बन्धन कितने परसेन्ट में मुक्त हुए हैं। लिप्त आत्मा हो व मुक्त आत्मा हो ?

सदा हर परिस्थिति में एकरस स्थिति रहे, उसका सहज साधन क्या है? क्योंकि सभी का लक्ष्य एक है, जैसे एक बाप, एक घर, एक ही राज्य होगा, ऐसे अभी भी एकरस स्थिति। लेकिन एकरस स्थिति में रहने का सहज साधन क्या मिला है? एक शब्द बताओ। वह एक शब्द है – ट्रस्टी। अगर ट्रस्टी बन जाते तो न्यारे और प्यारे होने से एकरस हो जाते। जब गृहस्थी है तो अनेक रस हैं, मेरा-मेरा बहुत हो जाता है। कभी मेरा घर, कभी मेरा परिवार,.....गृहस्थीपन अर्थात् अनेक रसों में भटकना। ट्रस्टीपन अर्थात् एकरस। ट्रस्टी सदा हल्का और सदा चढ़ती कला में जाएगा। तो यह सारा गुप ट्रस्टी गुप है ना! ज़रा भी मेरापन है तो मेरा माना गृहस्थीपन। जहाँ मेरापन होगा वहाँ ममता होगी। ममता वाले को गृहस्थी कहेंगे, ट्रस्टी नहीं। गृहस्थी तो आधाकल्प रहे और गृहस्थीपन के जीवन में क्या प्राप्ति हुई, उसका भी अनुभव किया। अब ट्रस्टी बनो। अगर थोड़ा भी गृहस्थीपन हो तो मधुबन में छोड़कर जाना। जो दुःख की लहर

पैदा करने वाला हो उसे छोड़कर जाना और जो सुख देने वाला हो उसे लेकर जाना ।

७

फरिश्ता किसके प्रभाव में नहीं आता । अपना कार्य किया और वो चला । फरिश्ता कभी किसी विघ्न के वश नहीं होता—न विघ्न के, न व्यक्ति के । तो होली हंस अर्थात् फरिश्ता । सेवा की और न्यारा । तो ऐसी स्थिति सदा है ? ऐसे होली हंस बने हो या बन रहे हो ? कब तक बनेंगे ? कोई टाइम की हद भी है या नहीं ? अगले साल भी यही कहेंगे कि—हाँ, बन रहे हैं ? नॉलेजफुल बन गये हो ना । तो जब नॉलेज है कि मुझ होली हंस का कर्तव्य क्या है, तो नॉलेज की शक्ति से परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? दूसरे साल भी यह नहीं कहना कि बन रहे हैं । तीव्र पुरुषार्थी का लक्ष्य ही होता है—‘अब’ और ढीले पुरुषार्थी का लक्ष्य होता है—‘कब’ । तो तीव्र पुरुषार्थी हो ना ।

८

जैसे कमल का पुष्प सदा न्यारा और सबका प्यारा है वैसे सदा कमल समान न्यारे रहते हो? प्रवृत्ति में रहते, दुनिया के वातावरण में रहते वातावरण से न्यारे। बाप के प्यार का पात्र वही बनते हैं जो न्यारे होते हैं जितना न्यारे उतना प्यारे। नम्बर बनते हैं न्यारे पन के आधार से। अति न्यारे तो अति प्यारे।

९

सदा अपने को डबल लाइट फरिश्ता समझते हो? फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। जितना-जितना हल्कापन होगा उतना स्वयं को फरिश्ता अनुभव करेंगे। फरिश्ता सदा चमकता रहेगा, चमकने के कारण सर्व को अपनी तरफ स्वतः आकर्षित करता है। ऐसे फरिश्ते जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। शरीर में रहते ही हैं सेवा के अर्थ न कि रिश्ते के आधार पर। देह के रिश्ते कि आधार पर नहीं रहते, सेवा के सम्बन्ध के हिसाब से रहते हो। सम्बन्ध समझकर प्रवृत्ति में नहीं रहना है, सेवा सम- झकर रहना है।

घर वहीं है, परिवार वही है, लेकिन सेवा का सम्बन्ध है। कर्मबन्धर के वशीभूत होकर नहीं रहते। सेवा के सम्बन्ध में क्या, क्यों नहीं होता। कैसी भी आत्माएं हैं, सेवा का सम्बन्ध प्यारा है। जहां देह है वहां विकार हैं। देह के सम्बन्ध से विकार आते हैं, देह के सम्बन्ध नहीं तो विकार नहीं। किसी भी आत्मा को सेवा के सम्बन्ध से देखो तो विकारों की उत्पत्ति नहीं होगी। ऐसे फरिश्ते होकर रहो। रिश्तेदार होकर नहीं। जहां सेवा का भाव रहता है वहां सदा शुभ भावना रहती है, और कोई भाव नहीं। इसको कहा जाता है अति न्यारा और अति प्यारा, कमल समान। सर्व पुरुषों से उत्तम फरिश्ता बनो तब देवता बनेंगे।